
इकाई 2: प्लेटो

संरचना

- 2.1 प्रस्तावना
- 2.2 उद्देश्य
- 2.3 जीवन—वृत्त
- 2.4 जीवन—दर्शन
 - 2.4.1 प्लेटो की रचनायें
- 2.5 शिक्षा दर्शन
 - 2.5.1 शिक्षा का उद्देश्य
 - 2.5.2 पाठ्यक्रम
 - 2.5.3 शिक्षा स्तर
 - 2.5.4 शिक्षण—विधि
 - 2.5.5 सार्वजनिक शिक्षा
- 2.6 प्लेटो के शिक्षा दर्शन की सीमायें
- 2.7 सारांश
- 2.8 अभ्यास प्रश्न
- 2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर
- 2.10 सहायक अध्ययन सामग्री

2.1 प्रस्तावना

प्लेटो को मानव—जाति के महानतम दार्शनिकों में से एक माना जाता है। उनका लक्ष्य न्याय पर आधारित राज्य की स्थापना है। प्लेटो के आदर्श राज्य के नागरिकों में कौन से गुण होने चाहिए? उन गुणों को कैसे विकसित किया जाये? जैसे प्रश्नों का उत्तर प्लेटो शिक्षा में पाते हैं। प्लेटो इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शिक्षा के माध्यम से ही न्याय पर आधारित आदर्श राज्य की स्थापना की जा सकती है। इस प्रकार प्लेटो की महानतम कृति 'रिपब्लिक' मूलतः शिक्षा पर लिखी गई प्रथम पुस्तक बन जाती है। प्लेटो विश्व का प्रथम

दार्शनिक है जिन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों की विस्तृत व्याख्या की एवं शिक्षा की व्यापक योजना प्रस्तुत की। शिक्षा के सिद्धान्त तथा शिक्षित व्यक्ति के वैचारिक जीवन पर प्लेटो के सिद्धान्तों का व्यापक तथा स्थायी प्रभाव पड़ा।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत हमलोग प्लेटो के जीवन-दर्शन और शिक्षा-दर्शन की व्यापक समझ बनाने में सफल होंगे। इस इकाई में निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला जायेगा।

- प्लेटो का जीवन-वृत्त
- प्लेटो का जीवन-दर्शन
- प्लेटो का शिक्षा-दर्शन
- प्लेटो के शिक्षा-दर्शन की सीमायें
- प्लेटो के शिक्षा-दर्शन का परवर्ती शिक्षा पर प्रभाव

इस तरह से इस इकाई में हमलोग प्लेटो के शिक्षा दर्शन के बारे में स्पष्ट समझ बना सकने में सफल होंगे।

2.3 जीवन-वृत्त

प्लेटो का जन्म 427 ईसा पूर्व में एथेन्स के एक अत्यन्त ही समृद्ध तथा कुलीन परिवार में हुआ था। उसका पालन-पोषण अमीरों की भाँति हुआ। पर वैभव और ऐश्वर्य का यह वातावरण प्लेटो के व्यक्तित्व के विकास को अवरोधित नहीं कर सका। वह बहुआयामी व्यक्तित्व का स्वामी था। उसने तत्कालीन उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। वह सुन्दर, आकर्षक और स्वस्थ देह-यष्टि का स्वामी था। व्यायाम में उसकी गहरी रुचि थी और कुश्ती में भी वह प्रवीण था। उसने एथेन्स की सेना में भी काम किया। वह एक महान भाव-प्रवण कवि था और सबसे बढ़कर एक महान दार्शनिक था।

प्रभावशाली राजनीतिक परिवार के होने के बावजूद प्लेटो को राजनीति से अरुचि थी। एथेन्स की तत्कालीन राजनीतिक पतन ने प्लेटो को राजनीति से पूर्णतः विमुख कर दिया। एथेन्स जहाँ अपना प्रभाव खोता जा रहा था वहीं सैनिक शक्ति में विश्वास रखने वाले स्पार्टा का प्रभुत्व बढ़ता जा रहा था। मैसेडोनिया भी प्रगति कर रहा था। पेलोपोनेसियन युद्ध के कारण एथेन्स और कमजोर हो गया। प्रजातंत्र के स्थान पर एथेन्स में कुलीन तंत्र का शासन हो

गया। यद्यपि प्रजातांत्रिक व्यवस्था फिर वापस आई— पर इसी शासन में प्लेटो के गुरु सुकरात को मृत्यु—दंड दिया गया। इस घटना ने प्लेटो को राजनीति से पूर्णतः विरत कर दिया।

बीस वर्ष की अवस्था में प्लेटो सुकरात के सम्पर्क में आया तथा सुकरात की मृत्यु तक, यानि 399 ई0पू0 तक प्लेटो सुकरात का प्रिय शिष्य बना रहा। सुकरात के व्यक्तित्व एवं ज्ञान का प्लेटो पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। सुकरात के सान्निध्य में प्लेटो की दर्शन में गहरी रूचि हो गई। 399 ई0 पू0 में जब सुकरात को मृत्युदंड दिया गया, प्लेटो की आयु 28 वर्ष की थी। गुरु की हत्या के कारण उसका एथेन्स से मोह भंग हो गया और उसने अगला दस वर्ष एथेन्स से बाहर मेगारा, मिश्र तथा इटली में बिताया। यह प्लेटो के जीवन का दूसरा भाग माना जा सकता है। मेगारा में प्रसिद्ध गणितज्ञ युक्लिड के सान्निध्य में पारमेनाइडिस के सिद्धान्त का गहन अध्ययन किया। मिश्र की सभ्यता के विकास ने प्लेटो को बहुत अधिक प्रभावित किया। इटली में पाइथागोरस के सिद्धान्तों का अध्ययन किया तथा इटली में शासन व्यवस्था की बारीकियों को जाना। इस प्रकार दस वर्षों के लम्बे देशाटन और विद्वानों की संगति ने प्लेटो को बौद्धिक तौर पर और परिपक्व बनाया। एथेन्स वापस आकर प्लेटो ने अपनी विश्व—प्रसिद्ध शिक्षण संस्था 'एकेडमी' की स्थापना की। प्लेटो के जीवन का यह तीसरा और सबसे अधिक रचनात्मक भाग था। अपने जीवन के अगले चालीस वर्षों तक वे इसी संस्था के माध्यम से शिक्षा देते रहे। प्लेटो की मृत्यु 347 ई0पू0 हुई, पर एकेडमी इसके उपरांत भी चलती रही। बाद में रोम के शासक की आज्ञा पर इस एकेडमी को बन्द कर देना पड़ा।

2.4 प्लेटो का जीवन—दर्शन

प्लेटो अपने गुरु सुकरात की ही तरह यह मानते हैं कि समय की आवश्यकता जीवन में एक नये नैतिक बन्धन (मोरल बॉन्ड) की है। प्लेटो ने जीवन के लिए एक नए नैतिक आधार को तैयार करने की कोशिश की जिसमें व्यक्ति को पर्याप्त अवसर हो तथा संस्थागत जीवन को भी उचित मान्यता मिले। प्लेटो इस नए नैतिक बन्धन का आधार विचारों तथा सार्वभौमिक एवं शाश्वत सत्य को मानते हैं। उनके अनुसार अच्छाई ज्ञान या पूर्ण विचारों में समाहित होता है जो कि 'मत' से भिन्न होता है।

प्लेटो एक आदर्शवादी चिन्तक थे जिन्होंने यथार्थ तथा अस्थायी की उपेक्षा की है तथा सार्वभौम और स्थायी पर बल दिया है। प्लेटो के लिए दृष्टिगोचर होने वाली वस्तुएँ कालसत्तात्मक (ऐहिक) हैं तथा अदृश्य वस्तुएँ ही नित्य हैं। उसके प्रत्यय दिव्य उपपत्तियां हैं, तथा इनका अनुभव ही विज्ञान अथवा ज्ञान है। इसके विपरीत वे लोग जो सिद्धान्तों का उनके मूर्त प्रतिमूर्तियों से अलग बोध नहीं रखते, ऐसे संसार में रहते हैं, जिसे प्लेटो स्वापनिक स्थिति कहते हैं। उनका वस्तुओं से परिचय मात्र 'मत' के समान होता है, वे यथार्थ का बोध तो रखते हैं, किन्तु सत् के ज्ञान से रहित होते हैं।

आदर्शवादी दर्शन भौतिक पदार्थ की तुलना में विचार को स्थायी और श्रेष्ठ मानता है। प्लेटो महानतम आदर्शवादी शिक्षाशास्त्री थे। उनके अनुसार पदार्थ जगत, जिसको हम इन्द्रियों से अनुभव करते हैं, वह विचार जगत का ही परिणाम है। विचार जगत वास्तविक और अपरिवर्तनशील है। इसी से भौतिक संसार का जन्म होता है। भौतिक पदार्थों का अन्त अवश्यम्भावी है।

विचार जगत का आधार प्रत्यय है। प्लेटो के अनुसार प्रत्यय पूर्ण होता है और इन्द्रियों के सम्पर्क में आने वाले भौतिक वस्तु अपूर्ण। प्लेटो ने फेड्रस में सुकरात से कहलवाया है कि सत्य या वास्तविकता का निवास मानव के मस्तिष्क में होता है न कि बाह्य प्रकृति में। (रॉस: 61) ज्ञानी मानव वह है जो दृष्टि जगत पर ध्यान न देकर प्रत्ययों के ज्ञान की जिज्ञासा रखता है— क्योंकि प्रत्ययों का ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है। ज्ञान तीन तरह के होते हैं— (i) इन्द्रिय—जन्य ज्ञान (ii) सम्मति जन्य ज्ञान तथा (iii) चिन्तन या विवेक जन्य ज्ञान। इनमें से प्रथम दो अधूरा, अवास्तविक एवं मिथ्या ज्ञान है जबकि चिन्तन या विवेकजन्य (प्रत्ययों का) ज्ञान इन्द्रियातीत होने के कारण वास्तविक, श्रेष्ठ एवं अपरिवर्तनशील है। व्यक्ति किसी भी पदार्थ को अपनी दृष्टि से देखकर उसकी व्याख्या करता है।— दूसरा व्यक्ति उसी पदार्थ की उससे भिन्न अर्थ ग्रहण कर सकता है। इस तरह से सम्मति भिन्न हो सकती है। अतः इसे ज्ञान कहना उचित नहीं है। प्लेटो ने रेखागणित के सिद्धान्तों को बेहतर ज्ञान कहा। जैसे त्रिभुज की दो भुजा मिलकर तीसरी भुजा से बड़ी होती है— यह सभी त्रिभुजों के लिए सही है। इससे भी अधिक श्रेष्ठ ज्ञान प्लेटो ने तत्त्व ज्ञान को माना।

प्लेटो ने संसार को सत् और असत् दोनों का संयोग माना है। प्रत्ययों पर आधारित होने के कारण संसारिक पदार्थ सत् है पर समरूपता का आभाव

एवं क्षणभंगुरता उसे असत् बना देता है। प्लेटो ने दृष्टि जगत को द्रष्टा की क्रिया का फल माना है। प्लेटो आत्मा की अमरता को स्वीकार करते हुए इसे परम विवेक का अंश मानता है।

नैतिक मूल्यों के सिद्धान्त को प्लेटो के संवाद में उच्च स्थान मिला है। सोफिस्टों ने यह धारणा फैलायी थी कि गलत और सही परिस्थिति विशेष पर निर्भर करता है। जो एक समय और स्थान पर सही है वह दूसरे समय और स्थान पर गलत हो सकता है। प्लेटो सुकरात के माध्यम से इस अवसरवादी विचारधारा का विरोध करते हुए कहते हैं कि नैतिक मूल्य शाश्वत हैं। फेडो में प्लेटो ने सम्पूर्ण सुन्दरता, सम्पूर्ण अच्छाई तथा सम्पूर्ण महानता की बात की है। इस संसार में जो भी सुंदर या अच्छा है वह इसी सम्पूर्ण सुन्दरता या अच्छाई का अंश है। सर्वोच्च सत्य से ही अन्य जीव एवं पदार्थ अपना अस्तित्व प्राप्त करते हैं।

यद्यपि प्लेटो ने सर्वोच्च सत्य या सत्ता को ईश्वर या गॉड के नाम से नहीं पुकारा (रॉस, 71) पर इसी परम सत्य का अंश मानव की आत्मा को माना। प्लेटो के अनुसार इस संसार और जीवन से परे भी एक संसार और जीवन है जो अधिक सत्य, अधिक सुंदर तथा अधिक वास्तविक है। आदर्श जीवन का उद्देश्य शिवत्व (अच्छाई) एवं सुन्दरता प्राप्त करना बताता है (रॉस: 128)।

2.4.1 प्लेटो की रचनायें

शिक्षा की दृष्टि से प्लेटो की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति 'दि रिपब्लिक' है। रूसो ने 'दि रिपब्लिक' का निरपेक्ष मूल्यांकन करते हुए कहा "अगर आप जानना चाहते हैं कि पब्लिक (सार्वजनिक) शिक्षा का क्या अर्थ है तो प्लेटो का रिपब्लिक पढ़िये। जो पुस्तकों के संदर्भ में केवल नाम या शीर्षक से निर्णय लेते हैं वे इसे राजनीति से सम्बन्धित मानते हैं, जबकि शिक्षा पर कभी भी लिखी गई यह सर्वोत्तम कृति है।" इस तरह से *दि रिपब्लिक* को शिक्षा शास्त्रियों ने अपने विषय का उत्कृष्टम ग्रंथ माना है। इसके प्रारम्भिक पृष्ठों में सुकरात को अपने मित्रों एवं शिष्यों के साथ न्याय पर आधारित राज्य की कल्पना करते दिखाया गया है। इसके लिए न्याय प्रिय नागरिक होना चाहिए। इस तरह से न्याय की प्रकृति पर विमर्श वस्तुतः शिक्षा पर विमर्श बन जाता है।

प्लेटो ने अनेक पुस्तक (संवाद) लिखे। इन संवादों को भाषा और शैली के आधार पर सर डेविड रॉस ने रचनाकाल को तय कर क्रमबद्ध करने का

प्रयास किया है।

1. **प्रथम काल (389 ई0पू0 से पहले)**— कैरेमिडेस, लैचेज, यूथाइफ्रो, हिपियस मेजर तथा मेनो।
2. **द्वितीय काल (389 ई0पू0 से 367 ई0पू0)**— क्रेटाइलस, सिम्पोजिसम, फैंडो, दि रिपब्लिक, फेयड्रस, परमेन्डिस तथा थियेटिटस।
3. **तृतीय काल (366 ई0पू0 से 361 ई0पू0)**— सोफिस्टस तथा पोलिटिक्स
4. **चतुर्थ काल (361 ई0पू0 के उपरान्त)**— दि लॉज।

इस सूची में पूर्व में लिखे संवादों जैसे दि एपोलॉजी, क्रीटो, लोइसिस, प्रेटागोरस, यूथिडेमस को नहीं रखा है क्योंकि ये संवाद प्लेटो के विचारों पर बहुत ही कम प्रकाश डालते हैं। सभी रचनायें संवाद या वार्तालाप पद्धति में हैं। संवादों में सुकरात को सभी ज्ञान का स्रोत दिखाकर प्लेटो अपने गुरु को अद्वितीय श्रद्धांजलि देता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

(क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

(ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1. प्लेटो के अनुसार ज्ञान कितने तरह के होते हैं? इनमें श्रेष्ठ ज्ञान कौन सा है?

.....

.....

.....

2. प्लेटो की रचना 'दि रिपब्लिक' के संदर्भ में रूसो ने क्या कहा?

.....

.....

.....

2.5 प्लेटो का शिक्षा-दर्शन

सुकरात एवं प्लेटो के पूर्व सोफिस्टों का प्रभाव था पर उनकी शिक्षा अव्यवस्थित थी तथा इससे कम ही व्यक्ति लाभान्वित हो सकते थे क्योंकि सोफिस्टों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा निःशुल्क नहीं थी और इस शुल्क को चुकाने में कुछ ही लोग सक्षम थे। सोफिस्टों ने शिक्षा के उद्देश्य को सीधी उपयोगिता से जोड़ दिया इससे भी वे लोगों की घृणा के पात्र बने। क्योंकि ग्रीस की प्रबुद्ध जनता शिक्षा को अवकाश हेतु प्रशिक्षण मानती थी न कि जीवन के भरण-पोषण का माध्यम। पेलोपोनेसियन युद्ध में एथेन्स की हार को लोगों ने सोफिस्टों की शिक्षा का परिणाम माना। फलतः उनका प्रभाव क्षीण हुआ और सुकरात तथा उसके योग्यतम शिष्य प्लेटो को एक बेहतर शिक्षा व्यवस्था के विकास के लिए उचित पृष्ठभूमि मिली।

मानव इतिहास में शिक्षा के सम्बन्ध में प्रथम पुस्तक प्लेटो द्वारा रचित 'रिपब्लिक' है। जिसे रूसो ने शिक्षा की दृष्टि से अनुपम कृति माना। इसके अतिरिक्त 'लाज' में भी शिक्षा के सम्बन्ध में प्लेटो के विचार मिलते हैं। तत्कालीन प्रजातंत्र हो या कुलीनतंत्र, राजनीति स्वार्थ पूर्ति का साधन बन गई था। षडयंत्रों, संघर्षों एवं युद्धों की जगह समदर्शी शासन जो नागरिकों के बीच सद्भावना को बढ़ा सके के महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्लेटो ने एक नये समाज की रचना आवश्यक माना। इस तरह के समाज की रचना का सर्वप्रमुख साधन प्लेटो ने शिक्षा को माना। समाज संघर्ष विहीन तभी होगा जब अपने-अपने गुणों के अनुसार सभी लोग शिक्षित होंगे।

प्लेटो ने शिक्षा को अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय माना है। *दि रिपब्लिक* में प्लेटो इसे युद्ध, युद्ध का संचालन एवं राज्य के शासन जैसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक मानता है। *दि लॉज* में शिक्षा को प्रथम तथा सर्वोत्तम वस्तु माना है जो मानव को प्राप्त करनी चाहिए। *दि क्रिटो* में अपनी बात पर बल देते हुए प्लेटो कहते हैं "वैसे मानव को बच्चों को जन्म नहीं देना चाहिए जो उनकी उचित देखभाल और शिक्षा के लिए दृढ़ नहीं रह सकते।"

जैसा कि हमलोग देख चुके हैं आदर्शवादी विचारक भौतिक जगत की अपेक्षा आध्यात्मिक या वैचारिक जगत को अधिक वास्तविक और महत्वपूर्ण मानते हैं। अंतिम या सर्वोच्च सत्य भौतिक जगत की अपेक्षा आध्यात्मिक या वैचारिक जगत के अधिक समीप है क्योंकि 'सत्य' या 'वास्तविक' की प्रकृति भौतिक प्रकृति न होकर आध्यात्मिक है। अतः आदर्शवादियों के लिए भौतिक

विज्ञानों की जगह मानविकी— यानि जो विषय स्वयं मानव का अध्ययन करता है अधिक महत्वपूर्ण है। वस्तुनिष्ठ तथ्यों के अध्ययन की जगह संस्कृति कला, नैतिकता, धर्म आदि का अध्ययन हमें सही ज्ञान प्रदान करता है।

2.5.1 शिक्षा का उद्देश्य

प्लेटो शिक्षा को सारी बुराइयों को जड़ से समाप्त करने का प्रभावशाली साधन मानता है। शिक्षा आत्मा के उन्नयन के लिए आवश्यक है। शिक्षा व्यक्ति में सामाजिकता की भावना का विकास कर उसे समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाती है। यह नैतिकता पर आधारित जीवन को जीने की कला सिखाती है। यह शिक्षा ही है जो मानव को सम्पूर्ण जीव जगत में सर्वश्रेष्ठ प्राणी होने का गौरव प्रदान करता है। प्लेटो ने शिक्षा के निम्नलिखित महत्वपूर्ण उद्देश्य बताये:—

1. **बुराइयों की समाप्ति एवं सद्गुणों का विकास:** अपने सर्वप्रसिद्ध ग्रन्थ *रिपब्लिक* में प्लेटो स्पष्ट घोषणा करता है कि 'अज्ञानता ही सारी बुराइयों की जड़ है। सुकरात की ही तरह प्लेटो सद्गुणों के विकास के लिए शिक्षा को आवश्यक मानता है। प्लेटो बुद्धिमत्ता को सद्गुण मानता है। हर शिशु में विवेक निष्क्रिय रूप में विद्यमान रहता है— शिक्षा का कार्य इस विवेक को सक्रिय बनाना है। विवेक से ही मानव अपने एवं राष्ट्र के लिए उपयोगी हो सकता है।
2. **सत्य, शिव (अच्छाई एवं सुन्दर) की प्राप्ति:**— प्लेटो एवं अन्य प्राच्य एवं पाश्चात्य आदर्शवादी चिन्तक यह मानते हैं कि जो सत्य है वह अच्छा (शिव) है और जो अच्छा है वही सुन्दर है। सत्य, शिव एवं सुन्दर ऐसे शाश्वत मूल्य हैं जिसे प्राप्त करने का प्रयास आदर्शवादी शिक्षाशास्त्री लगातार करते रहे हैं। प्लेटो ने भी इसे शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य माना।
3. **राज्य को सुदृढ़ करना:**— सुकरात एवं प्लेटो के काल में ग्रीस में सोफिस्टों ने व्यक्तिवादी सोच पर जोर दिया था। लेकिन आदर्शवादी शिक्षाशास्त्रियों की दृष्टि में राज्य अधिक महत्वपूर्ण है। राज्य पूर्ण इकाई है और व्यक्ति वस्तुतः राज्य के लिए है। अतः शिक्षा के द्वारा राज्य की एकता सुरक्षित रहनी चाहिए। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में सहयोग, सद्भाव और भातृत्व की भावना का विकास होना चाहिए।

4. **नागरिकता की शिक्षा:**— न्याय पर आधारित राज्य की स्थापना के लिए अच्छे नागरिकों का निर्माण आवश्यक है जो अपने कर्तव्यों को समझें और उसके अनुरूप आचरण करें। प्लेटो शिक्षा के द्वारा नई पीढ़ी में दायित्व बोध, संयम, साहस, युद्ध-कौशल जैसे श्रेष्ठ गुणों का विकास करना चाहते थे। ताकि वे नागरिक के दायित्वों का निर्वहन करते हुए राज्य को शक्तिशाली बना सकें।
5. **सन्तुलित व्यक्तित्व का विकास:**— प्लेटो के अनुसार मानव-जीवन में अनेक विरोधी तत्व विद्यमान रहते हैं। उनमें सन्तुलन स्थापित करना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य है। सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास एवं उचित आचार-विचार हेतु 'स्व' को नियन्त्रण में रखना आवश्यक है। शिक्षा ही इस महत्वपूर्ण कार्य का सम्पादन कर सकती है।
6. **विभिन्न सामाजिक वर्गों को सक्षम बनाना:**— जैसा कि हमलोग देख चुके हैं प्लेटो ने व्यक्ति के अन्तर्निहित गुणों के आधार पर समाज का तीन वर्गों में विभाजन किया है। ये हैं: संरक्षक, सैनिक तथा व्यवसायी या उत्पादक वर्ग। दासों की स्थिति के बारे में प्लेटो ने विचार करना भी उचित नहीं समझा। पर ऊपर वर्णित तीनों ही वर्णों को उनकी योग्यता एवं उत्तरदायित्व के अनुरूप अधिकतम विकास की जिम्मेदारी शिक्षा की ही मानी गई।

इस प्रकार प्लेटो शिक्षा को अत्यन्त महत्वपूर्ण मानता है। व्यक्ति और राज्य दोनों के उच्चतम विकास को प्राप्त करना प्लेटो की शिक्षा का लक्ष्य है। वस्तुतः शिक्षा ही है जो जैविक शिशु में मानवीय गुणों का विकास कर उसे आत्मिक बनाती है। इस प्रकार प्लेटो की दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य अत्यन्त ही व्यापक है।

2.5.2 पाठ्यक्रम

हमलोग पहले ही देख चुके हैं कि आदर्शवादी शिक्षाशास्त्री मानविकी या मानव-जीवन से सम्बन्धित ज्ञान को भौतिक ज्ञान से सम्बन्धित विषयों से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। उसके अनुसार जीवन के प्रथम दस वर्षों में विद्यार्थियों को अंकगणित, ज्यामिति, संगीत तथा नक्षत्र विद्या का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। गणित आदि की शिक्षा व्यापार की दृष्टि से न होकर उनमें निहित शाश्वत सम्बन्धों को जानने के लिए होना चाहिए। संगीत के गणित

शास्त्रीय आधारों की सिफारिश करते हुए प्लेटो कहता है यह शिवम् एवं सुन्दरम् के अन्वेषण में एक उपयोगी सत्य है। यदि इसका अन्य उद्देश्य को ध्यान में रखकर अनुसरण किया जाए तो यह अनुपयोगी है।

इसके उपरांत विद्यार्थियों को कविता, गणित, खेल—कूद, कसरत, सैनिक—प्रशिक्षण, शिष्टाचार तथा धर्मशास्त्र की शिक्षा देने की बात कही गई। प्लेटो ने खेल—कूद को महत्वपूर्ण माना लेकिन उसका उद्देश्य प्रतियोगिता जीतना न होकर स्वस्थ शरीर तथा स्वस्थ मनोरंजन प्राप्त करना होना चाहिए। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क तथा आत्मा का निवास संभव है। प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था में जिम्नास्टिक (कसरत) एवं नृत्य को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। प्लेटो ने इन दोनों के समन्वय का आग्रह किया है। वे मानते थे कि 'कसरत विहीन संगीतज्ञ कायर होगा, जबकि संगीत विहीन कसरती पहलवान आक्रामक पशु हो जायेगा।' प्लेटो ने नृत्य को कसरत का ही अंग मानते हुए उसे युद्धकाल और शांतिकाल— दोनों में ही उपयोगी मानते हैं।

प्लेटो ने साहित्य, विशेषकर काव्य की शिक्षा को महत्वपूर्ण माना है। काव्य बौद्धिक संवेदनशील जीवन के लिए आवश्यक है। गणित को प्लेटो ने ऊँचा स्थान प्रदान किया है। रेखागणित को प्लेटो इतना अधिक महत्वपूर्ण मानते थे कि उन्होंने अपनी शैक्षिक संस्था 'एकेडमी' के द्वार पर लिखवा रखा था कि 'जिसे रेखागणित न आता हो वे एकेडमी में प्रवेश न करें।' इन विषयों में तर्क का प्रयोग महत्वपूर्ण है— और सर्वोच्च प्रत्यय— ईश्वर की प्राप्ति में तर्क सहायक है।

प्लेटो की शिक्षा—व्यवस्था में 'डाइलेक्टिक' या दर्शन का महत्वपूर्ण स्थान है। प्लेटो के 'डाइलेक्टिक' में नीतिशास्त्र, दर्शन, मनोविज्ञान, अध्यात्मशास्त्र, प्रशासन, कानून, जैसे विषय समाहित हैं। इनका अध्ययन उच्चस्तरीय विद्यार्थियों को कराना चाहिए। यह प्लेटो की शिक्षा—व्यवस्था का सर्वोच्च हिस्सा है। डाइलेक्टिक का अध्ययन वस्तुतः दार्शनिकों के लिए है जो राज्य का संचालन करेंगे। दार्शनिक के पाठ्यविषय में प्लेटो संगीत तथा व्यायाम जैसे विषयों को अपर्याप्त कह कर अस्वीकृत कर देता है, क्योंकि ये विषय परिवर्तनीय हैं, इसके विपरीत जिन विज्ञानों का वह अन्वेषक है उन्हें सत् की विवेचना करनी चाहिए: उनमें सर्वगत अनुप्रयोग तथा साथ ही चितनोन्मुख बनाने की क्षमता होनी चाहिए। जिस पाठ्यक्रम की संस्तुति प्लेटो ने की उसमें गणित, ज्यामिति, ज्योतिष विद्या (खगोल विज्ञान) सम्मिलित थे। हस्तकलाओं

को अपमानजनक कहकर बहिष्कृत करने में वह अपनी कुलीन वर्गीय तथा सीमित रूझान का परिचय देता है।

2.5.2 शिक्षा के स्तर

प्लेटो ने आधुनिक मनोवैज्ञानिकों की तरह बच्चे के शारीरिक एवं मानसिक विकास की अवस्था के आधार पर शिक्षा को विभिन्न स्तरों में विभाजित किया है। ये विभिन्न स्तर हैं—

- (ii) **शैशवावस्था:**— जन्म से लेकर तीन वर्ष शैशव-काल है। इस काल में शिशु को पौष्टिक भोजन मिलना चाहिए और उसका पालण-पोषण उचित ढंग से होना चाहिए। चूँकि प्लेटो के आदर्श राज्य में बच्चे राज्य की सम्पत्ति है अतः राज्य का यह कर्तव्य है कि वह बच्चे की देखभाल में कोई ढील नहीं होने दे।
- (iii) **नर्सरी शिक्षा:**— इसके अन्तर्गत तीन से छह वर्ष की आयु के बच्चे आते हैं। इस काल में शिक्षा प्रारम्भ कर देनी चाहिए। इसमें कहानियों द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए तथा खेल-कूद और सामान्य मनोरंजन पर बल देना चाहिए।
- (iv) **प्रारम्भिक विद्यालय की शिक्षा:**— इसमें छह से तेरह वर्ष के आयु वर्ग के विद्यार्थी रहते हैं। वास्तविक विद्यालयी शिक्षा इसी स्तर में प्रारम्भ होती है। बच्चों को राज्य द्वारा संचालित शिविरों में रखा जाना चाहिए। इस काल में लड़के-लड़कियों की अनियन्त्रित क्रियाओं को नियन्त्रित कर उनमें सामन्जस्य स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। इस काल में संगीत तथा नृत्य की शिक्षा देनी चाहिए। नृत्य एवं संगीत विद्यार्थी में सम्मान एवं स्वतंत्रता का भाव तो भरता ही है साथ ही स्वास्थ्य सौन्दर्य एवं शक्ति की भी वृद्धि करता है। इस काल में गणित एवं धर्म की शिक्षा भी प्रारम्भ कर देनी चाहिए। *रिपब्लिक* इसी अवधि में अक्षर-ज्ञान देने की संस्तुति करता है पर *दि लॉज* के अनुसार यह कार्य तेरहवें वर्ष में प्रारम्भ करना चाहिए।
- (v) **माध्यमिक शिक्षा:**— यह काल तेरह से सोलह वर्ष की उम्र की है। अक्षर ज्ञान की शिक्षा पूरी कर काव्य-पाठ, धार्मिक सामग्री का अध्ययन एवं गणित के सिद्धान्तों की शिक्षा इस स्तर पर दी जानी चाहिए।

- (vi) **व्यायाम (जिमनैस्टिक) काल:**— यह सोलह से बीस वर्ष की आयु की अवधि है। सोलह से अठारह वर्ष की आयु में युवक—युवती व्यायाम, जिमनैस्टिक, खेल—कूद द्वारा शरीर को मजबूत बनाते हैं। स्वस्थ एवं शक्तिशाली शरीर भावी सैनिक शिक्षा का आधार है। अठारह से बीस वर्ष की अवस्था में अस्त्र—शस्त्र का प्रयोग, घुड़सवारी, सैन्य—संचालन, व्यूह—रचना आदि की शिक्षा एवं प्रशिक्षण दिया जाता है।
- (vii) **उच्च शिक्षा:**— इस स्तर की शिक्षा बीस से तीस वर्ष की आयु के मध्य दी जाती है। इस शिक्षा को प्राप्त करने हेतु भावी विद्यार्थियों को अपनी योग्यता की परीक्षा देनी होगी और केवल चुने हुए योग्य विद्यार्थी ही उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे। इस काल में विद्यार्थियों को अंकगणित, रेखागणित, संगीत, नक्षत्र विद्या आदि विषयों का अध्ययन करना था।
- (viii) **उच्चतम शिक्षा:**— तीस वर्ष की आयु तक उच्च शिक्षा प्राप्त किए विद्यार्थियों को आगे की शिक्षा हेतु पुनः परीक्षा देनी पड़ती थी। अनुत्तीर्ण विद्यार्थी विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कनिष्ठ अधिकारी के रूप में कार्य करेंगे। सफल विद्यार्थियों को आगे पाँच वर्षों की शिक्षा दी जाती है। इसमें 'डाइलेक्टिक' या दर्शन का गहन अध्ययन करने की व्यवस्था थी। इस शिक्षा को पूरी करने के बाद वे फिलॉस्फर या 'दार्शनिक' घोषित हो जाते थे। ये समाज में लौटकर अगले पन्द्रह वर्ष तक संरक्षक के रूप में प्रशिक्षित होंगे और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करेंगे। राज्य का संचालन इन्हीं के द्वारा होगा।

2.5.4 शिक्षण—विधि

प्लेटो के गुरु, सुकरात, संवाद (डायलॉग) द्वारा शिक्षा देते थे— प्लेटो भी इसी पद्धति को पसन्द करते थे। प्लेटो ने संवाद के द्वारा मानव जीवन के हर आयाम पर प्रकाश डाला है। *एपालोजी* एक अत्यधिक चर्चित संवाद है जिसमें सुकरात अपने ऊपर लगाए गए समस्त आरोपों को निराधार सिद्ध करते हैं। 'क्राइटो' एक ऐसा संवाद है जिसमें वे कीड़ों के साथ आत्मा के स्वरूप का विवेचन करते हैं। प्लेटो अपने गुरु सुकरात के संवाद को स्वीकार कर उसका विस्तार करता है। उसने संवाद को 'अपने साथ निरन्तर चलने वाला संवाद'

कहा (मुनरो, 1947: 64)। सुकरात ने इसकी क्षमता सभी लोगों में पाई पर प्लेटो के अनुसार सर्वोच्च सत्य या ज्ञान प्राप्त करने की यह शक्ति सीमित लोगों में ही पायी जाती है। शाश्वत सत्य का ज्ञान छठी इन्द्रिय यानि विचारों का इन्द्रिय का कार्य होता है। इस प्रकार सुकरात अपने समय की प्रजातांत्रिक धारा के अनुकूल विचार रखता था जबकि इस दृष्टि से प्लेटो का विचार प्रतिगामी कहा जा सकता है।

2.5.5 सार्वजनिक शिक्षा

‘दि रिपब्लिक’ में शिक्षा के वर्गीय चरित्र को प्लेटो ने अपने अंतिम कार्य ‘दि लॉज’ में प्रजातांत्रिक बनाने का प्रयास किया। वे ‘दि लॉज’ में लिखते हैं “बच्चे विद्यालय आयेंगे चाहे उनके माता-पिता इसे चाहे या नहीं चाहे। अगर माता-पिता शिक्षा नहीं देना चाहेंगे तो राज्य अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करेगी और बच्चे माता-पिता के बजाय राज्य के होंगे। मेरा नियम लड़के एवं लड़कियों दोनों पर लागू होगा। लड़कियों का बौद्धिक एवं शारीरिक प्रशिक्षण उसी तरह से होगा जैसा लड़कों का।” लड़कियों की शिक्षा पर प्लेटो ने जोर देते हुए कहा कि वे नृत्य के साथ शस्त्र-संचालन भी सीखें ताकि युद्ध काल में जब पुरुष सीमा पर लड़ रहे हों तो वे नगर की रक्षा कर सकें। इस प्रकार मानव जाति के इतिहास में प्लेटो पहला व्यक्ति था जिसने लड़के एवं लड़कियों को समान शिक्षा देने की वकालत की। इस दृष्टि से वह अपने समय से काफी आगे था।

2.6 प्लेटो के शिक्षा दर्शन की सीमायें

प्लेटो के आदर्श राज्य में शासक बनने वाले दार्शनिकों की शिक्षा केवल एकांगी ही नहीं है अपितु उसकी उच्च शिक्षा की योजना समुदाय के इसी वर्ग तक सीमित भी है। रक्षकगण केवल संगीत तथा व्यायाम की सामान्य शिक्षा ही प्राप्त करते हैं, और शिल्पकारों को, जिन्हें राज्य-शासन में भाग लेने की अनुमति नहीं दी गई थी, या तो अपरिपक्व व्यावसायिक प्रशिक्षण अथवा ‘कोई शिक्षा नहीं’ से संतुष्ट होना पड़ता है। शासक वर्ग तक ही शिक्षा के लाभों को सीमित रखना आधुनिक प्रजातान्त्रीय शिक्षा के विरुद्ध है।

शिक्षा एवं राज्य की सरकार में शिल्पकारों को भाग लेने से वंचित रखने के कारण प्लेटो के राज्य को ‘आदर्श’ की संज्ञा नहीं देनी चाहिए।

न्यूमन (1887: 428) ने ठीक कहा है “सबसे अच्छा राज्य वह है जो पूर्ण स्वर्ण है, वह नहीं है जो स्वर्णजटित है... दस न्यायप्रिय मनुष्यों से अच्छा राज्य नहीं हो जाता, राज्य की श्रेष्ठता का रहस्य इस तथ्य में निहित रहता है कि उसमें उचित रीति से व्यवस्थित श्रेष्ठ नागरिकों का समुदाय हो। प्लेटो ने अपने राज्य के तीन भागों में से किसी एक में भी वांछनीयतम जीवन को अनुभव किए बिना उस सब की बलि दे दी है जो जीवन को प्राप्य बनाता है।” इस प्रकार आदर्शवादी प्लेटो पर्याप्तरूपेण आदर्शवादी नहीं था।

प्राचीन यूनान में दास प्रथा काफी प्रचलित थी और बड़ी संख्या में दास थे पर प्लेटो उनको सिविल सोसाइटी (नागरिक समाज) का हिस्सा नहीं मानते थे, न ही उन्हें नागरिक का अधिकार देना चाहते थे। अतः उनकी शिक्षा के संदर्भ में प्लेटो कुछ नहीं कहते। वस्तुतः वे उन्हें शिक्षा का अधिकारी नहीं मानते थे और उनके लिए यह व्यवस्था की कि उन्हें पारिवारिक पेशे को ही अपनाकर घरेलू कार्यों में लगे रहना चाहिए।

प्लेटो ने व्यावसायिक शिक्षा को महत्वहीन माना। उनका कहना था कि शिक्षा तो केवल चिन्तन प्रधान—विषय की ही हो सकती है। वे शारीरिक श्रम को निम्न स्तरीय कार्य मानते थे। *दि लॉज* में तो उन्होंने यहाँ तक प्रावधान कर डाला कि अगर नागरिक अध्ययन की जगह किसी कला या शिल्प को अपनाता है तो वह दण्ड का भागी होगा।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

- (क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
 (ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

3. प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्य क्या थे?

.....

4. प्लेटो द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम में डाइलैक्टिक (दर्शन) का क्या स्थान है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.7 सारांश

इस इकाई में हमलोगों ने प्लेटो के शिक्षा दर्शन का अध्ययन किया। हमलोगों ने देखा कि प्लेटो मानव इतिहास के पहले दार्शनिक थे जिन्होंने शिक्षा पर व्यवस्थित विचार व्यक्त किया। एक आदर्शवादी विचारक होने के नाते प्लेटो ने भौतिक जगत की अपेक्षा विचार जगत को अधिक महत्व दिया। उनकी शिक्षा व्यवस्था का लक्ष्य वस्तुतः शाश्वत मूल्यों को प्राप्त करना था। शिक्षण विधि में संवादों का प्रयोग जिस तरह से प्लेटो ने किया उस तरह से किसी अन्य शिक्षाशास्त्री ने नहीं। हमलोगों ने इस इकाई में यह भी देखा कि प्लेटो ने अपने शैक्षिक विचारों को अपनी शैक्षिक संस्था *एकेडमी* में लागू करने का प्रयास किया। ये सारे तथ्य प्लेटो को मानव इतिहास के प्रथम शिक्षाशास्त्री के रूप में स्थापित करते हैं।

2.8 अभ्यास प्रश्न

1. प्लेटो को एक आदर्शवादी शिक्षाशास्त्री क्यों माना जाता है?
2. शिक्षा के इतिहास में 'दि रिपब्लिक' के महत्व की विवेचना कीजिए।
3. प्लेटो द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम की विवेचना करें।

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. प्लेटो के अनुसार ज्ञान तीन तरह के होते हैं
 - (i) इन्द्रिय जन्य ज्ञान
 - (ii) सम्मति जन्य ज्ञान

(iii) चिन्तन या विवेक जन्य ज्ञान

इनमें प्रथम दो अधूरा एवं अवास्तविक है जबकि चिन्तन या विवेक जन्य ज्ञान इन्द्रियातीत होने के कारण श्रेष्ठ है।

2. प्लेटो की रचना 'दि रिपब्लिक' के बारे में रूसो ने कहा "अगर आप जानना चाहते हैं कि पब्लिक (सार्वजनिक) शिक्षा का क्या अर्थ है तो प्लेटो का रिपब्लिक पढ़िये। जो पुस्तकों के संदर्भ में केवल नाम या शीर्षक से निर्णय लेते हैं वे इसे राजनीति से सम्बन्धित मानते हैं, जबकि शिक्षा पर कभी भी लिखी गई यह सर्वोत्तम कृति है।"
3. प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था के निम्नलिखित उद्देश्य थे
 - i. बुराइयों की समाप्ति एवं सद्गुणों का विकास।
 - ii. सत्य, शिव एवं सुन्दर की प्राप्ति।
 - iii. राज्य को सुदृढ़ करना।
 - iv. नागरिकता की शिक्षा।
 - v. सन्तुलित व्यक्तित्व का विकास।
 - vi. विभिन्न सामाजिक वर्गों को सक्षम बनाना।
4. प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था में 'डाइलेक्टिक' या दर्शन का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें नीतिशास्त्र, दर्शन, मनोविज्ञान, अध्यात्मशास्त्र, प्रशासन, कानून जैसे विषय समाहित हैं। यह प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था का सर्वोच्च हिस्सा है। डाइलेक्टिक का अध्ययन वस्तुतः दार्शनिकों के लिए है जो राज्य का संचालन करेंगे।

2.10 सहायक अध्ययन सामग्री

डूरांट विल (1960), *दि स्टोरी ऑफ फिलॉसफी*, न्यूयार्क: पाकेट बुक्स।

पाण्डेय, रामशकल (1999), *विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री*, आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर।

मुनरो, पॉल (1947), *ए ब्रीफ कोर्स इन दि हिस्ट्री ऑफ एडुकेशन*, न्यूयार्क: दि मैकमिलन।

शर्मा, जी0 आर0 (2002), *वेस्टर्न फिलॉसफी ऑफ एडुकेशन*, नई दिल्ली: अटलाण्टिक पब्लिसर्स।

पाश्चात्य शैक्षिक सम्प्रदायों के
विचारक

रस्क, आर० आर० (2000), *दि डोक्टराइन्स ऑफ ग्रेट एड्युकेटर्स*, नई दिल्ली:
कनिष्क पब्लिसर्स ।

रस्क, आर० आर० (1990), *शिक्षा के दार्शनिक आधार*, जयपुर: राजस्थान
हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, (अनुवादक— लक्ष्मीलाल के० ओड़) ।

रॉस, जे० एस० (1950), *ग्राउन्डवर्क ऑफ एडुकेशनल थियोरी*, लन्दन: जार्ज
जी० हार्पर ।